International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आध्यात्मिक दर्शन पर डॉ एनी बेसेंट के विचाररू एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

संगीता सिंह
पोस्टडॉक्टोरल फेलो (यूजीसी)
बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी

शोध सार

प्रत्येक जन्म के कारण मनुष्य की मानसिक, नैतिक और आत्मिक शक्तियों में वृद्धि होनी चाहिए। विकासक्रम भी यही कहता है। जीवात्मा को संसार यात्रा में बहुत दीर्घकाल लगता है उसका कारण यही है। विकासक्रम भी यह कहता है। विकासक्रम के अनुकूल हम लोग पूरी-पूरी उन्नति न कर बहुत थोड़ी ही उन्नति कर पा रहे हैं। सीधा ऊपर चढ़ने का मार्ग ग्रहण न कर हम लोग बहुत घुमाव के रास्ते से होकर राह में आने वाली और भी छोटी-छोटी गलियों में इधर-उधर दौड़ते फिरते हैं। इसलिए मनुष्य जाति को इस यात्रा में बहुत समय लगता है और विकास होने में लाखों-करोड़ों वर्ष की आवश्यकता पड़ती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र एनी बेसेंट के विचारों के विशेष संदर्भ के साथ आध्यात्मिक शिक्षा से संबंधित है जिसमें उनके जीवन और सामाजिक दर्शन के साथ-साथ थियोसोफिकल दर्शन आध्यात्मिक शिक्षा को प्रभावित करते हैं। यह पेपर द यूनिटी ऑफ गॉड और द यूनिवर्सल ब्रदरहुड के सिद्धांतों के आधार पर उनके थियोसोफिकल दर्शन से संबंधित है, जो आध्यात्मिक शिक्षा का अभिन्न अंग हैं।

मुख्य शब्दरू विकासक्रम, जीवात्मा, आध्यात्मिक शिक्षा, सामाजिक दर्शन, थियोसोफिकल दर्शन,

प्रस्तावना

वर्तमान समय में भारतवर्ष की जनता लोकतांत्रिक सोच या दर्शन में विशेष आस्था रखती है। अतः उसी के अनुरूप आज शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोकतंत्रीय नागरिकता का विकास एवं शैक्षिक अवसरों की समानता निर्धारित किया गया है। इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका के लोग प्रयोजनवादी दार्शनिक दृष्टिकोण में ज्यादा विश्वास करने लगे जिसका परिणाम यह हुआ कि वहाँ की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य तकनीकी विकास एवं नये शोध को बढ़ावा देना हो गया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दार्शनिक दृष्टिकोण से तात्पर्य किसी व्यक्ति या समाज का जीवन की घटना के प्रति सोच या दृष्टिकोण माना जाता है। उदाहरणार्थ– जब गौतम बुद्ध ने मार्ग में जाते हुए एक मृत व्यक्ति, एक रोगी व वृद्ध व्यक्ति एवं संन्यासी को देखा तो उनका हृदय विचलित हो गया और उन्होंने अनुभव किया कि संसार में केवल दुःख ही दुःख है। अतः उन्होंने संसार को दुखमय मानते हुए पारिवारिक जीवन से संन्यास ले लिया और उन दुःखों के निवारण हेतु जिस ढंग से खोज की, उस ढंग में उनका दार्शनिक दृष्टिकोण निहित था।

अतः शिक्षा की प्रत्येक समस्या का समाधान दार्शनिक दृष्टिकोण के आधार पर किया जाता है। चूंकि दर्शन का सम्बन्ध जीवन से होता है इसलिए दर्शन जीवन को उपयोगी बनाने का मार्ग प्रस्तुत करता है। शिक्षा तो स्वयं जीवन ही है इसीलिए शिक्षा और दर्शन परस्पर एक दूसरे से सम्बन्धित एवं एक ही लक्ष्य को प्राप्त करने वाले होते हैं। दर्शन जीवन के लक्ष्य का निर्धारण कर सिद्धान्त प्रस्तुत करता है जबकि शिक्षा उन सिद्धान्तों को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करती है। जैसा कि एडम्स महोदय ने स्पष्ट किया है– 'शिक्षा दर्शन–शास्त्र का गत्यात्मक पहलू है।' अथवा जीवन के आदर्शों को प्राप्त करने का प्रयोगात्मक साधन है। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति को जीवन के उन लक्ष्यों अथवा आदर्शों को प्राप्त कराती है जो दार्शनिकों द्वारा निर्धारित किये जाते हैं।

किसी भी व्यक्ति का जीवन–दर्शन एक निश्चित विश्वास पर आधारित होता है। यदि वह विश्वास जीवन के लिए उपयोगी होता है तो उसका शैक्षिक महत्व भी अवश्य ही होगा। अतः दर्शन को शिक्षा से अलग नहीं किया जा सकता। वस्तुतः दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं। इस विचार की पुष्टि इस बात से होती है कि रूसो, पेस्टालाजी, डयूवी, स्पेन्सर, महात्मा बुद्ध, गुरू गोविन्द सिंह, महात्मा गाँधी आदि अपने–अपने समय के महान दार्शनिक थे तथा इन्होंने अपनी–अपनी विचारधाराओं से शिक्षा को अनेकों प्रकार से प्रभावित किया और अन्त में स्वयं भी शिक्षा–शास्त्री बन गये। प्राचीन भारत में ऋषि–मुनि भी अच्छे दार्शनिक होने के साथ–साथ अच्छे शिक्षक भी थे।

शिक्षा और दर्शन की इस पारस्परिक प्रगाढ़ता एवं निर्भरता ने शोधकर्त्री को इस ओर उत्प्रेरित किया कि वह श्रीमती एनी बेसेन्ट के शैक्षिक दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन करे, जिन्होंने भारतीय दर्शन के सर्वोच्च मत 'एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' की वकालत कर उसका

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रयोग अपने शैक्षिक क्रियाकलापों में किया, जो भारतीय दृष्टिकोण से बहुत ही लाभदायक रहे।

डॉ0 एनी बेसेन्ट ने अपने स्वाध्याय, आत्मपन, जीवन की विचित्र स्थितियों और परिस्थितियों के आधार पर प्राप्त अनुभव, मानव जीवन से सम्बद्ध विभिन्न पहलुओं पर अपने गहन चिन्तन आदि के माध्यम से संचित ज्ञान को अपनी रचनाओं एवं व्याख्यानों के माध्यम से प्रकट किया है जो हर युग में मानव जीवन के लिए प्रेरणा स्रोत का कार्य करते रहेंगे।

किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली से वहाँ की नीति, दर्शन, संस्कृति एवं आर्थिक स्थिति का पता चलता है। तकनीकी विकास एवं औद्योगीकरण के कारण प्रत्येक देश की शिक्षा प्रणाली प्रभावित हुई है। किसी देश की प्रगति बहुत हद तक शिक्षा के स्तर पर निर्भर करती है। शिक्षा मानव जीवन के लिए प्रशिक्षण के समान है। शिक्षा के सार्वभौमीकरण के संवैधानिक प्रावधान की भारतीय सरकार द्वारा भी प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर रखते हुए इसके लिए बृहद स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। भविष्य में इसके और घनीभूत होने की सम्भावनाएँ हैं।

अनेक विचारकों एवं दार्शनिकों के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण किया गया है किन्तु श्रीमती एनी बेसेन्ट जैसी महान विदुषी पर उतने शोध कार्य नहीं किये गये हैं जितने की होने चाहिए विशेषतः उनके शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर। इस सन्दर्भ में अब तक जो कार्य किये भी गये हैं, वे अधिकांशतया अंग्रेजी भाषा में किये गये हैं, जिसका अध्ययन करने में हिन्दी भाषा के पाठकों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन करने पर मैंने पाया कि श्रीमती एनी बेसेन्ट के शैक्षिक विचारों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संविष्ट कर एवं उसकी प्रासंगिकता को उजागर कर भारतीय शिक्षा प्रणाली के गिरते स्तर में सुधार किया जा सकता है और विशुद्ध भारतीय विचारधारा को समयोचित रूप में समझा और समझाया था जा सकता है। श्रीमती बेसेन्ट के शिक्षा क्षेत्र में योगदान को जन-जन तक पहुँचाना मुझे समसामयिक एवं युगधर्म प्रतीत हुआ। यह एक ऐसा मार्ग बन सकता है जिसके माध्यम से भारत के समृद्ध अतीत को न केवल सफलता पूर्वक जोड़ा जा सकता है अपितु अतीत के धरोहरों को आधुनिक और भावी अपेक्षाओं के अनुरूप परिष्कृत कर व्यापक रूप से अंगीकार भी किया जा सकता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अपने युग में सम्पूर्ण भारतवासियों की नस-नस में नई आशा, आकांक्षा व प्रेरणा प्रदान करने वाली श्रीमती एनी बेसेन्ट ने किसी नये धर्म का सूत्रपात नहीं किया बल्कि भारत के प्राचीन सनातन धर्म को उसी के प्राचीन आधारों पर पुनः गौरवान्वित करते हुए नए भारत के अभ्युदय हेतु धर्म को भी शिक्षा का एक प्रमुख आधार बनाया। श्रीमती एनी बेसेन्ट यह अच्छी तरह से जानती थीं कि कोई भी बड़ा कार्य किसी संगठन के बिना सम्भव नहीं है इसीलिए अपने निर्दिष्ट कार्यों की पूर्ति हेतु उन्होंने थियोसॉफिकल सोसायटी के माध्यम की स्थापना की।

वर्तमान समय में लोकतंत्र के बढ़ते प्रभाव में व्यष्टि को बराबर का महत्व दिया जा रहा है। आज वही संगठन उपयोगी रह गए हैं जो व्यक्ति और समाज के बीच परस्पर सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम हैं, जो धनी-निर्धन के बीच कोई भेद नहीं करते, जो सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता व सौहार्द्र का भाव रखते हैं और जो सम्पूर्ण विश्व के लोगों के प्रति बन्धुत्व का भाव रखते हैं, वस्तुतः इन्हीं सब उद्देश्यों को लेकर आज विश्व में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बने हैं जो विश्व बन्धुत्व व विश्व शान्ति का प्रयास कर रहे हैं। एनी बेसेन्ट की शिक्षा सम्बन्धी बुनयादी मान्यताएं इसी उदात्त दृष्टिकोण पर आधारित दिखायी देती हैं जिनमें हिन्दू धर्म के इसी सार्वभौमिक उदात्त दृष्टिकोण को अंगीकृत किया गया है जिसमें धार्मिक कट्टरता और असहिष्णुता, कूप मंडूकत्व आदि को कोई स्थान नहीं है।

श्रीमती एनी बेसेन्ट ने जिन संगठनों का सूत्रपात किया वे आज से एक सदी पूर्व जितने प्रेरणादायी थे उससे भी ज्यादा वे वर्तमान समय में प्रेरणास्पद हैं और आगे आने वाले समय में भी प्रेरणास्पद रहेंगे। श्रीमती बेसेन्ट तो थियोसाफिस्ट बनने से पूर्व ही भारत के प्रति श्रद्धावान थीं। भारत के प्रति उनका वक्तव्य 1875 ई0 में दिया गया था, जिसमें उन्होंने भारतीय आत्मा की आवाज बनकर ब्रिटिश शासकों की आक्रान्तक नीतियों एवं दमन का विरोध किया था। 1878 ई0 में भारतवर्ष के साथ उनका पूर्ण तादाम्य स्थापित हो चुका था। इसी वर्ष उन्होंने 'इग्लैण्ड इण्डिका तथा अफगानिस्तान' नामक पुस्तक में अत्यन्त कठोर शब्दों में भारत में ब्रिटिश शासन की निन्दा की थी। यही पुस्तक वास्तव में भारतीय सांस्कृतिक जागरण एवं स्वतंत्रता संग्राम प्राक्कथमिक रूप है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जो लोग अंगेजों द्वारा भारतीयों को सभ्यता का पाठ पढ़ाने सिद्धान्त के समर्थक हैं वे अज्ञानी हैं, क्योंकि

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतवर्ष उस समय विश्व सभ्यता का केन्द्र था जब पाश्चात्य देशों के लोग नग्न जंगली के समान रहा करते थे एवं आपस में लड़ते रहते थे। जबयूरोपीय देशों में शिक्षा का क्षेत्र सर्वथा तिमिराच्छादित था, भारतीय ज्ञान-विज्ञान का सूरज अपने पूर्ण प्रकाश के साथ ज्वाजल्य मान था।

जीवन के सम्बनध में डॉ0 बेसेन्ट का विचार

जीवन के सम्बनध में डॉ0 बेसेन्ट का विचार है कि जीवन का प्रत्येक चरण हमें सफलता के थोड़ा निकट लाता है और अन्तिम असफलता ही सफलता का प्रवेश द्वारा है। कार्य के लिए पर्याप्त समय है, अवसर भी अनन्त हैं और आज का पतन कल के उत्थान का सोपान है। आज हम जो नहीं कर पा रहे हैं, उसे कल निश्चित रूप से पूरा कर लेंगे, केवल यह दृढ़ विश्वास करना है कि हमारी शक्ति के बाहर कुछ भी नहीं है। व्यक्ति को अपने निजी आदर्श सदैव ऊँचे रखने चाहिए किन्तु दूसरों के सम्बन्ध में अपने विचार और अपनी दृष्टि सदैव उदार रखनी चाहिए। हमारे आदर्श हमें ऊपर उठायेंगे और हमारी उदारता हमारे पतित बन्धुओं को प्रेरणा भी प्रदान करेगी। पददलित होकर कोई भी ऊँचे नहीं उठा है, प्रेम के द्वारा उत्साहित होकर ही कोई ऊँचे उठता है और अपने पापों और भूलों से छुटकारा पाता है।

शरीर की सीमाओं से आविष्ट भ्रमित व्यक्ति स्वयं अपने ही जीवन को कैसे समझेंगे? इससे महत्वपूर्ण पाठ और कोई नहीं है कि हम अपने स्वयं के श्रेष्ठ विचारों के अनुसार दूसरों को नियंत्रित करने या बनाने का प्रयत्न करें। यह व्यक्ति का दृष्टिकोण सदैव ही जीवन के एक विद्यार्थी का दृष्टिकोण होना चाहिए। जब हम ऐसा सोचते हैं कि व्यक्ति विशेष को परिस्थिति विशेष में क्या मिला है? किसी समस्या से हमें क्या सीखना है? उसका क्या समाधान होना चाहिए तभी हमारे सामने यह स्पष्ट हो पाता है कि हमें जीवन को किस ढंग से देखना चाहिए तथा हमारे ज्ञानमय जीवन का प्रारम्भ कैसे होता है।

यदि हम जीवन को इस व्यापक दृष्टिकोण से देख पायें, यदि हम वस्तुओं को वैसा ही देख सकें जैसा कि वे है तो उनके वाह्य स्वरूप की चकाचौंध से हम भ्रमित न होगे और इस प्रकार जीवन महानता की ओर अग्रसर हो जाता है। हमे प्रयत्न करना चाहिए कि हमारा जीवन महान हो इससे ज्यादा कुछ नहीं। महान जीवन ही आनन्दमय जीवन है जिसके आदर्श महान हैं, वह स्वयं महान है क्योंकि पदार्थ तो अन्तःस्थिति आत्मा की इच्छानुसार बदलता रहता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बाहर से तुच्छ दिखने वाला जीवन उसमें व्याप्त आदर्श की भव्यता के कारण महान बन सकता है। यदि हम महान कार्य न कर सकें तो छोटे-छोटे कार्य ही पूर्णता से करें क्योंकि पूर्णता कार्य के आकार में नहीं है बल्कि उसके प्रत्येक अंश की पूर्णता में निहित होता है। जैसा हम विचार करते हैं वैसा ही बनते हैं और इस प्रकार हम अपने जन्मजात चरित्र को भी आदर्श रूप में गढ़ सकते हैं। अपनी कमियों और भूलों को ठीक कर उसे अपने सद्गुणों द्वारा दृढ़ बना सकते हैं।

परिस्थिति- के सम्बनध में डॉ0 बेसेन्ट का वर्णन

जो हमारी परिस्थितियाँ हैं वे ही हमारी उन्नति और विकास के लिए सर्वोत्तम अवसर प्रदान करती है। यह सोचना कि किन्हीं अन्य परिस्थितियों में हम इससे अच्छा कर पाते यह हमारी महान भूल होगी। लोग कहते हैं कि यदि उनकी परिस्थितियाँ भिन्न होती तो वे कहीं और अधिक उपयोगी जीवन बिता पाते, यह उनकी भूल है। वास्तव में हम जहाँ हैं वहाँ भी हम अधिकतम कर सकते हैं। उत्थान के पथ पर अगला कदम उठाने के लिए हमें जिन चीजों की आवश्यकता होती है, वे सब हमें प्राप्त हैं। जिस क्षण हम जीवन में कोई अन्य दिशा लेने के लिए तैयारी में होंगे उसी क्षण जीवन की वह दिशा हमारे सामने खुल जायेगी। क्या परिवार में कोई अवरोध है? हमको धैर्य का पाठ पढ़ाने के लिए ठीक इसी प्रकार के अवरोध की आवश्यकता थी। क्या व्यवसाय हमारे लिए बाधक है? जिन गुणों की हममें कमी है, उनको विकसित करने के लिए हमकों इसी बाधा की आवश्यकता थी। प्रत्येक परिस्थिति में यह कल्याणकारी हो जाता है। यही युक्तिसंगत है। जिन परिस्थितियों में हम हैं हमें मानना चाहिए कि वे सर्वोत्तम हैं और हमारी उन्नति और विकास के लिए एक देव बुद्धि ही इस प्रकार की योजना बना सकती है। इस ज्ञान से जीवन में जो शान्ति प्राप्त होती है, इसका वर्णन करना असम्भव है। सारा असंतोष स्वतः दूर हो जाता है, सारी चिंतायें समाप्त हो जाती हैं, जो प्राप्त है उससे कुछ अधिक की चाह तब हृदय को कचोटती नहीं रहती। हृदय परम और पूर्ण संतोष से भर जाता है। संतोष की इस स्थिति में ही विषम परिस्थितियों से पाठ सीख लिया जाता है और उस पाठ से परिस्थितियाँ भी धीरे-धीरे अपने आप बदलने लगती हैं। यदि हम अपने भाग्य को बदल नहीं सकते तो अपने आपको बदल डालें और दूसरी दिशा से उस भाग्य का सामना करें। फिर जहाँ असफलता अनिवार्य सी लगती थी, वहीं हम सफलतापूर्वक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

चलने लग जायेंगे वस्तुतः इस प्रकार कर्म करने की कुशलता ही योग का दूसरा नाम है। जहाँ प्रेरणा अधिक होती है, वहाँ प्रगति न कर पाना सामान्य व्यक्ति के जीवन से भी नीचे गिर जाना है। हमारे सच्चे प्रेरक वे नहीं हैं जो हमसे सहमत होते रहते हैं, जो हमसे मतभेद रखते हैं। जो आलोचना द्वारा हमें अपने दोषों और दुर्बलताओं का परिज्ञान कराते हैं।

कर्म के सम्बनध में डॉ0 बेसेन्ट की परिकल्पना

कर्म-नियम के सम्बन्ध में अपर्याप्त ज्ञान सर्वाधिक हानिकर है। कर्मफल के प्रति उदासीनता का यह अर्थ नहीं हैं कि हम अपने कार्य के परिणाम को देखकर अपने कार्यक्रम को न सुधारें। इस प्रकार परिणाम पर विचार करके हम अनुभव प्राप्त करते हैं और हमारा ज्ञान बढ़ता है, परन्तु खूब सोच-विचार कर किसी पवित्र उद्देश्य हेतु किये गये कार्य के फल के सम्बन्ध में हमें प्रायः लोग इस प्रकार बातें करते हैं मानो यह बहुत बड़ा बोझ हो जो जनम से ही मनुष्य के सिर पर लाद दिया गया हो और जिसके समबन्ध में वह कुछ कर ही नहीं सकता है, कभी-कभी ऐसा होता भी नहीं, परन्तु अधिकांश परिस्थितियों में हमारे प्रतिदिन के कर्म से हमारे समस्त पुराने कर्म-फल परिवर्तित होते रहते हैं। यह तो निर्माण की सतत प्रक्रिया है।

विचार से चरित्र का, इच्छा से अवसर का और कर्म से वातावरण का निर्माण होता है। किसी भी एक बीते दिन पर विचार करें तो हमको पता चलेगा कि हमारे विचार बहुत कुछ मिले-जुले हैं, कुछ उपयोगी, कुछ हानिकर। यदि हमको इन सबका हिसाब करना पड़े तो कर्म के प्रवाह में इन सब मिले-जुले विचारों का परिणाम निश्चित कर पाना अत्यन्त कठिन होगा। यही बात हमारी इच्छाओं के साथ है हमारी वाणी कभी अविवेकपूर्ण, कभी प्रिय, कभी मधुर तो कभी कठोर और परिणाम फिर मिला-जुला। यही बात हम अपने पिछले जीवन पर लागू करें तो हम इस धारणा से मुक्त हो जायेंगे कि एक महान प्रवाह हैं, जो हमको बहाये लिये जा रहा है। वह प्रवाह हजारों-हजार विभिन्न धाराओं के मिलने से बना है और ये धारायें एक दूसरे से टकराती रहती हैं। हमारे द्वारा लिये गये अनेक निर्णयों के अनुसार कर्म करने से कर्म के तराजू का पलड़ा ऊपर नीचे होता रहता है। कर्म की यही समझ प्रयत्न करने की प्रेरणा देती है। प्रयत्न करते रहना सदैव ही बुद्धिमानी है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सेवा के सम्बनध में डॉ0 बेसेन्ट का सिद्धांत

दूसरे के लिए प्रेम से प्रेरित होकर जो कुछ भी किया जाता है, वही सेवा है। आध्यात्मिक जीवन पूर्णरूपेण निवेदित जीवन है। यदि हम पायी हुई जीवनी शक्ति को दूसरों की सेवा में व्यय नहीं कर देते हैं तो आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति की आशा छोड़ देनी चाहिए। विकास पथ पर जो जीव-जन्तु हम से पीछे हैं, हम उनके पोषक, शिक्षक, सहायक और पथ-प्रदर्शक और संरक्षक के स्थान पर है। जब कभी हम उनके प्रति क्रूरता, निर्दयता या शठता का व्यवहार करते हैं तो हम उनके प्रति अपराधी सिद्ध होते हैं। सेवा के लिए हम स्वयं को उत्सर्ग कर दें और कुछ भी बचा न रखें, जहां कहीं सहायता देना संभव हो, सहायता दें, जहां इस सन्दर्भ में कार्य करने की आवश्यकता हो वहां सपरिश्रम कार्य करें तो इसी का नाम सेवा है। किसी ऊँचे आदर्श के लिए आत्मोत्सर्ग ही इस प्रकार परम सेवा है। संसार के सुख-दुख, कष्ट और आनन्द से अपना एकात्म स्थापित कर लें, प्रत्येक मानव के कष्ट को अपना कष्ट बना लें, प्रत्येक की पीड़ा अपनी बन जायें, प्रत्येक का आनन्द हमारा अपना आनन्द, यही एकात्मक भाव एवं भेद विहीनता ही सच्ची सेवा का पर्याय है।

तितिक्षा के सम्बनध में डॉ0 बेसेन्ट का अभिप्राय

जिन कष्टों और परीक्षाओं से होकर हमें अपना जीवन गुजारना होता है, उसे सहन करते हुए, अपने में तितिक्षा को हर प्रकार से दृढ़ करना चाहिए। कष्टों की यदि हम पर वर्षा भी हो तो भी वह अग्राह्य नहीं क्योंकि तब हम अपने पुण्य कर्मो के परिणाम को भोगकर आगे से अपने को सेवा करने के योग्य बन सकेंगे। दुःख को लोग अभिशाप मानते हैं, दुःख अवश्य ही मनोरंजक नहीं है, वह कष्टप्रद है किन्तु वह अभिशाप नहीं है दुःख वांछनीय है, अवांछनीय नहीं। दुःख पूर्णत्व की प्राप्ति की कसौटी है। बिना कष्ट सहन के पूर्णत्व प्राप्त नहीं हो सकता। कष्ट तो बड़ी शिक्षा देते हैं। जीवन के अच्छे से अच्छे पाठ सुख में नहीं दुःख में ही पढ़े जाते हैं। जब तक हम जीवन को समझ नहीं लेते वह एक अत्यन्त कष्टप्रद बोझ सा लगता है लेकिन जब उसे समझ लेते हैं तो वह सहज सह्य हो जाता है और सारा दृश्य ही बदल जाता है। सहनशीलता वह सबल शक्ति है जिसके द्वारा हम सब कुछ सह सकते हैं, निराशा और कठिनाई के होते हुए भी, हम सहनशक्ति के बल पर विजय प्राप्त करते हैं, बाधाओं से घबराते नहीं उनको दूर करते हैं। सहनशीलता का गुण शौर्य साधना-पथ पर चलने की आकांक्षा रखने वालों के लिए अनिवार्य है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में आधुनिक भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में यदि श्रीमती एनी बेसेन्ट के शैक्षिक विचारों की परिकल्पना की प्रासंगिकता एवं व्यवहार्यता के प्रायोगिक अस्तित्व को ढूँढ़ना चाहते हैं तो हमें काफी निराशा ही हाथ लगती हैं आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य आज मानव-निर्माण व चरित्र निर्माण नहीं रह गयौ अपितु उसका लक्ष्य जीविका प्राप्ति का माध्यम या साधनभर रह गया है जिसके लिए उचित या अनुचित उपायों से उपाधि प्राप्त कर ली जाती हैं

भारत के प्राचीन चातुर्वण्य व्यवस्था से श्रीमती बेसेन्ट अभिभूत थीं। उसी ने शिक्षा के क्षेत्र में आज आरक्षण व्यवस्था के ऐसे बीज बो दिये हैं जिससे योग्य छात्र कुंठित होकर गम्भीर अध्ययन से विरत हो रहे हैं। यद्यपि इसका प्रधान कारण आज की जातिवादी व्यवस्था पर आधारित राजनीति को ही माना जाना चाहिए। दूसरी ओर जिन्हें सुविधा मिल रही है वे सुविधा भोगी होकर अपनी योग्यता बढ़ाना ही नहीं चाहते। सब मिल गया और चाहिए क्या?

वर्तमान व्यवस्था में अब शिक्षा तपश्चर्या या शुचिसाधन नहीं केवल व्यवसाय और धनागम का साधन बन चुकी है और यह स्थिति बनी है सामाजिक न्याय के नाम पर छात्र-अध्यापक और विद्यालय के प्रबन्ध तंत्र सब इसी दूषित मानसिकता से ग्रसित हो चुके हैं। अब विद्यालय पवित्र शिक्षा मंदिर नही रह गये है। शिक्षक छात्र सम्पर्क पूरी तरह व्यापारिक और मशीनी बन गया है। इसी कारण शिक्षा की दुकाने तथाकथित 'कोचिंग सेंटर्स' भी चलने लगे हैं जिनमें उपाधि प्राप्त करने, योग्य अध्ययन-अध्यापन की तैयारी का कार्य होता है और उसी अनुपात में अधिकांश विद्यालयों में कालक्षेप मात्र होता है।

श्रीमती एनी बेसेन्ट प्राचीन भारतीय शिक्षा और संस्कृति की हिमायती थीं जबकि आधुनिक भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में कान्वेंट स्कूलों की ही बाढ़ सी आती जा रही है। बच्चे अपनी शिक्षा का श्रीगणेश विदेशी संस्कृति की नकल के संरक्षण में प्रारम्भ करते हैं। अंत में यही कहना पड़ता है कि काल के कुठाराघात से श्रीमती एनी बेसेन्ट का यत्नपूर्वक संजोया गया यह स्वप्न आज क्षत-विक्षत होता चला जा रहा है। स्वयं उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं में भी आज उनके द्वारा स्थापित व्यवहार मानदंडों का अस्तित्व

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ढूढ़ने पर मुश्किल से ही मिल पाएगा। बदली हुयी परिस्थितियां और उनके जैसे व्यक्तित्व के प्रभाव का अभाव सम्भवतः उसके मुख्य कारण कहे जा सकते है। श्रीमती बेसेन्ट जहाँ अपनी शिक्षा योजना के माध्यम से पाश्चात्यी करण और अंग्रेजीकरण की द्रुत गति से चल रही प्रक्रिया पर रोक लगा कर उसको एक अनुकूल भारतीय हितों की सीमा तक स्वदेशी करण की ओर मोड़ने की कोशिश की गयी थी जबकि आज शिक्षा के क्षेत्र में पाश्चात्यीकरण की प्रक्रिया इतनी तेज हो गयी है जैसे कोई बड़ा बाँध टूट जाय और उसका जल सारे अवरोधों को एक वारगी वहां ले जाए। आज के भारत में श्रीमती बेसन्ट के शिक्षा सम्बनधी विचारों के साथ कुछ ऐसा ही होता दिखायी देता है।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

1) यादव, अनिता : प्रज्ञा-एनी बेसेन्ट, स्मृति अंक, 42-46, (भाग 1, 2) वर्ष 1996-2001, पृ0 201.
2) दिनकर, रामधानी सिंह 'संस्कृति के चार अध्याय'' लोक भारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-1, वर्ष 1993
3) गुप्त, लक्ष्मी नारायण महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री', कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष 1992-93
4) जोशी, शांतिः समसामयिक भारतीय दर्शनिक, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1975.
5) नोखल, रामस्वरूप : आचार्य शंकर ब्रह्मवाद् किताबघर, आचार्य नगर, कानपुर, 1975.
6) लाड, अशोक कुमार : भारतीय दर्शन में मोक्ष -चिन्तन एक तुलनात्मक अध्ययन,मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल,
7) बेसण्ट एनी : मुमुक्षु का मार्ग, इण्डियन बुक शॉप, थियोसाफिसकल सोसाइटी, भारतीय शाखा वाराणसी, 1961.
8) बेसेण्ट एनी : आध्यात्मिक जीवन, इण्डियन बुक शाप,
9) सी0 डब्ल्यू0, लेडवीटर का भाष्य थियोसाफिकल सोसाइटी, भारतीय शाखा, वाराणसी, 1969

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

10) मनुष्य तथा उसके कोष, इण्डियन बुक शाप, थियोसाफिकल सोसाइटी, भारतीय शाखा, वाराणसी, 1969.

11) बेसेन्ट एनी द वर्क आफ द थियोसाफिकल सोसाइटी इन इण्डिया, 1907

12) सुन्द्रम एस एनी बेसेन्ट अ फिनोमनन'', द इण्डियन थियोसाफिस्ट, द थियोसाफिकल सोसाइटी, वाराणसी

13) बर्निंयर राधा एनी बेसेन्ट, हर लाईफ एण्ड मिशन, इण्डिया थियोसाफिस्ट

14) प्रकाश एस मिसेस बेसेन्ट एण्ड द इण्डिया आफ टु द थियोसाफिकल सोसाइटी, वाराणसी, 1990

15) जिनसना दास सी अ शॉर्ट बायोग्राफी आफ एनी बेसेन्ट, द थियोसाफिकल पब्लिशिंग हाउस, अदयर मद्रास 1986